छात्रों का निर्माण अध्यापक करें

– श्रीराम शर्मा आचार्य

छात्रों का निर्माण अध्यापक करें

लेखक :
श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-281003
फोन : (0565) 2530128, 2530399
फैक्स : (0565) 2530200
ई-मेल : yugnirman@awgp.org

सन् 2012 मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनों से अपनी बात

हमारे आत्मीय बंधुओ! यह पुस्तक परमपूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों को संकलित कर प्रकाशित की जा रही है। परमपूज्य गुरुदेव ने आम आदमी को आत्म मूर्च्छना से ग्रसित बताया है और यह कहा है कि वह चाहे कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो? यदि उसे सही ढंग से सोचना, समाज का नियोजन करना, प्रतिकूलताओं से मोर्चा लेना, समाज के अन्य घटकों के साथ रहना नहीं आता है तो फिर उसका पढ़ा-लिखा होना न केवल बेकार है, बल्कि उस पर लगाया हुआ धन भी राष्ट्रीय अपव्यय के समान है। वे कहते हैं कि ऐसे तथाकथित शिक्षितों के लिए अब संजीवनी विद्या की आवश्यकता पड़ेगी, जो उन्हें मूर्च्छना से उभार सके, समाज परायण बना सके। वे लिखते हैं कि गुण, कर्म व स्वभाव का आमूल-चूल परिष्कार ही उज्ज्वल भविष्य की संभावना की भवितव्यता को पूरा करेगा। अध्यात्म प्रधान यह संजीवनी विद्या कौन देगा? किस प्रकार उसका विस्तार होगा? और इतने विराट परिवार में युग अध्यापक कहाँ से आएँगे? यही खोज इन दिनों महाकाल की प्रेरणा से इस पुंस्तक द्वारा शिक्षकों का आह्वान करके की जा रही है। शिक्षकों को उनकी गरिमा एवं गौरव का बोध कराया जा रहा है। आत्म विस्मृति त्यागने का आह्वान किया जा रहा है। शिक्षक के दायित्व का बोध कराया जा रहा है। आशा है युगऋषि की लेखनी इस युग के आचार्यों की मूर्च्छना को जाग्रति में बदलेगी और शिक्षक वर्ग अपने सम्मान की रक्षा हेतु अपने दायित्व को निभाने में तत्पर होगा।

व्यवस्थापक—युग निर्माण योजना, मथुरा-3

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु की गरिमा, महत्ता एवं जिम्मेदारी

शिक्षा की महत्ता और गरिमा, उपयोगिता और आवश्यकता का वर्णन अनादि काल से लेकर अब तक के सभी मनीषियों ने पूरा जोर देते हुए किया है। यही कारण है कि 'विद्या से अमृत प्राप्त होने' जैसे सूत्रों का प्रचलन हुआ। सरस्वती पूजन प्रकारांतर से विद्या की ही अभ्यर्थना है। गणेश पूजन भी इसी संदर्भ में किया जाता है। विद्वान सर्वत्र पूजे जाते हैं, जबकि शासन अधिकारी केवल अपने क्षेत्र में ही पूजे जाते हैं। धन-संपत्ति जिस-तिस प्रकार खरच होती, चुराई जाती, नष्ट की जाती भी देखी जाती है, किंतु ज्ञान-संपदा बाँटने पर अन्य पदार्थों की तरह घटती नहीं, बल्कि और अधिक बढ़ती ही रहती है। सुसंस्कारिता के रूप में यह जन्म-जन्मांतरों तक साथ देती रहती है।

विद्यादान को सर्वोत्कृष्ट दान माना गया है। अन्न, वस्त्र, औषधि, धन आदि के अनुदान कष्ट-पीड़ितों एवं अभावग्रस्तों की सामयिक सहायताभर कर पाते हैं। उससे तत्काल राहत तो मिलती है, जो आवश्यक भी है, परंतु चिरस्थाई समाधान इतने भर से नहीं होता। इसके लिए श्रमशीलता, दूरदर्शिता, सूझबूझ के सहारे, स्वावलंबन के चिरस्थाई प्रबंध करने होते हैं। यह सब योग्यता एवं प्रतिभा के सहारे ही किया जा सकता है। स्पष्ट है कि स्थिर समाधान के लिए, सुविकसित-समुन्नत स्तर पाने के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन आधारों के सहारे स्वयं भी पार हुआ जा सकता है और अपनी नाव में बिठाकर औरों को भी पार किया जा सकता है।

छात्र शिक्षा के साथ-साथ ऐसा कुछ सीखता रहे, जिससे बिना नौकरी खोजे वह अपने क्षेत्र में, अपने बलबूते अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आजीविका चला सके। इस प्रतिपादन में गृह-उद्योग की ओर संकेत किया गया है। इस प्रसंग को विचारकों और व्यवस्थापकों के ऊपर छोड़कर आगे बढ़ने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है सुसंस्कारिता संवर्द्धन की विद्या। विद्यार्थी में इसे गहराई से जमाने-सींचने के लिए आज की परिस्थितियों में अकेला अध्यापक वर्ग भी बिना किसी बाहरी सहायता के बहुत कुछ करके दिखा सकता है। इस सचाई को चरितार्थ कर दिखाने वाले अनेकों उदाहरण मौजूद हैं। अध्यापक को अपनी गरिमा समझने और चरितार्थ कर दिखाने में वर्तमान परिस्थितियाँ भी बाधा नहीं पहुँचा सकतीं। जहाँ शिक्षण तंत्र के वेतनमान, सुविधा-साधनों को बढ़ाए जाने की बात है, वहाँ तक तो अधिकाधिक साधन जुटाने का समर्थन ही किया जाएगा, पर इसमें यदि कुछ कमी रहे, अड़चन पड़े तो भी यह तो हो ही सकता है कि अध्यापकगण अपनी गुरु-गरिमा को अपने ही बलबूते बनाए रहें और अपने गौरव का महत्त्व अनुभव करते हुए बढ़ते चलें। शिक्षा एक प्रतिपादन है, उसका मूर्तरूप शिक्षक है।

विद्यार्थी अपने समय का महत्त्वपूर्ण भाग अध्यापकों के साथ रहकर विद्यालयों में गुजारते हैं। उनके प्रति सहज श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव भी रहता है। जो विद्या दान देते हैं, उच्च शिक्षित हैं, अपनी सहायता से छात्रों को भावी जीवन में सुयोग्य, संपन्न बना सकने के लिए अभूतपूर्व भूमिका निभाते हैं, उनके उपकारों को, कोई कैसे भुला सकता है? उनसे आयु में ही नहीं हर हालत में छोटी स्थिति वाले छात्रों पर उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व की छाप पड़नी ही चाहिए। अध्यापकों का अनुशासन सहज स्वाभाविक है। आते-जाते समय उनका अभिवादन होता है। उनके कक्षा में प्रवेश करते ही स्तब्धता छा जाती है, जो बच्चे घर में उद्दंडता बरतते हैं, वे भी स्कूल के अनुशासन में सीधे हो जाते हैं। कोई जरूरी नहीं कि इसके लिए हमेशा दंड देने की कठोरता अपनानी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़े, पर अनुशासित वातावरण को बनाए रखना अध्यापक का अपना काम है। यह तनिक भी कठिन नहीं है। यदि शिक्षक का निजी जीवन चरित्र ठीक हो और व्यवहार शालीनता से भरापूरा हो तो कोई कारण नहीं कि छात्र उनका अनुशासन न मानें, प्रेरणा ग्रहण न करे और दिए गए तथ्यपूर्ण परामर्श पर ध्यान न दे। माना कि समय की चाल उलटी है और उच्छृंखलता के माहौल ने शिक्षार्थियों में भी उद्दंडता भर दी है। इतने पर भी निराशा जैसी कोई बात नहीं है। अनगढ़ पशुओं को सरकस वाले चतुराई के साथ वशवर्ती कर लेते और उन्हें आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाने योग्य बना लेते हैं। फिर कोई कारण नहीं कि गुरु गरिमा सही स्थिति में होने पर छात्रों को स्कूली पाठ्यक्रम में निष्णात और व्यक्तित्व की दृष्टि से समुन्नत, सुसंस्कृत न बनाया जा सके।

माता, पिता और गुरु को त्रिदेवों की उपमा दी गई है। उनमें से माता जन्म देती है, पिता पोषण करता है, किंतु गुरु तो नर पामर को शिक्षा-दीक्षा से अलंकृत करके नर देवों की पंक्ति में बिठा देता है। इसी कारण उसके लिए अधिक श्रद्धा व्यक्त की गई है, उसको आदर, मान आदि दिया गया है, पर गरिमा के अनुरूप शिक्षक को अपना स्तर ऐसे साँचे के सदृश्य बनाना चाहिए, जिसके संपर्क में आने वाले कच्ची मिट्टी जैसे मनमोहक खिलौनों के रूप में ढलते चले जाएँ। ऐसा कर पाने पर ही यह अपेक्षा की जा सकती है कि न केवल छात्र अभिभावकों का समुदाय, वरन सारा समाज उन्हें भावभरी श्रद्धा प्रदान करेगा। उनका आदेश मानने में पीछे न रहेगा।

शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम कहा जाए तो सुसंस्कारिता संवर्द्धन से संबंधित सभी प्रयासों को दीक्षा कहना होगा। स्कूली पढ़ाई पूरी कराना तो आवश्यक है ही। इसे वेतन के लिए किया गया परिश्रम भी माना जा सकता है, पर बात इतने तक सीमित नहीं समझी जा सकती। करणीय यह भी है कि जिस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माता-पिता बच्चों के प्रति भावनाशील और प्रयत्नरत रहते हैं, उसी प्रकार अध्यापक भी अपने संपर्क के छात्रों में शालीनता, सज्जनता, श्रमशीलता, जिम्मेदारी, बहादुरी, ईमानदारी और समझदारी जैसी सत्प्रवृत्तियों को विकसित करने में कुछ उठा न रखे। यह प्रयास ही उनकी वह सेवा होगी, जिसके आधार पर सुविकसित नई पीढ़ी को, समाज के नव-निर्माण का श्रेय-सुयोग मिलेगा। इन्हीं प्रयत्नों में निरत रहने वाले शिक्षक समूचे समाज को अपना ऋणी बना सकते हैं। स्वयं ही अपनी गरिमा में भी चार चाँद लगा सकते हैं।

अध्यापक अपनी भूमिका समझें

अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि उनके संरक्षण में शिक्षा पाती हुई जो नई पौध पल रही है, उनके वांछित विकास की ओर ध्यान केंद्रित करें और अपने पूरे ईमान के साथ उनके संस्कारों की ऐसी रचना करें कि जब भारत के वे भावी नागरिक समाज में उतरें, तो संसार एक साथ चकित होकर भारतीय समाज को आमूल बदलता हुआ देखे।

छोटी-छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों से लेकर उच्चतम कक्षाओं के छात्रों को भी अध्यापक अपने संसर्ग के प्रभाव से आदर्श नागरिक बनाने में बहुत सफल हो सकते हैं। उनके चिंतन तथा स्वभाव में आमूल-चूल परिवर्तन कर सकना कठिन नहीं। उनकी जिज्ञासा तथा ग्रहणशीलता सहज ही बहुत अधिक होती है। उच्च कक्षाओं के विकसित मस्तिष्क वाले युवकों में हित-अहित सोचने की क्षमता आ जाती है। उनमें उपद्रवी तथा विद्रोही प्रवृत्तियाँ इसलिए ही पनप रही हैं कि उन्हें भला-बुरा कहने वाले, रूखे उपदेश देने वाले बहुत हैं, किंतु उनके प्रति संवेदना एवं सहानुभूति रखते हुए उन्हें सही दिशा-निर्देश देने की क्षमता तथा इच्छा संपन्न व्यक्ति उन्हें खोजने पर भी नहीं मिलता। अध्यापक इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमी की पूर्ति बखूबी कर सकते हैं, इसके लिए उनके मनोवैज्ञानिक स्तर एवं उनकी स्नेह की भूख को समझकर समुचित ढंग अपनाने भर की आवश्यकता है।

वैसे तो स्कूल के "कैरीकुलम" (पाठ्यक्रम) में ऐसी बहुत सी विधियाँ दी होती हैं, जिनके द्वारा छात्रों के मनोविकास तथा चरित्र निर्माण में सहायता मिल सकती है, पर अधिक प्रगति तभी होगी, जब अध्यापक व्यक्तिगत रूप से इस दशा में कुछ अधिक अभिरुचि लेने लगें, अधिक जिम्मेदारी अनुभव करें और अधिक प्रयत्नशील रहें।

विद्यार्थियों के मस्तिष्क में विचार आंदोलन जगाने के लिए आवश्यक है कि उनकी विचारधारा को उस अशुभ, अवांछनीय दिशा में बढ़ने से रोका जाए जो अन्य परिस्थितियों से प्रभावित होकर अनजाने में ग्रहण कर ली हैं। जिस पद्धति से विद्यार्थी अपने आप को चला रहा है, अध्यापक को चाहिए कि उसका अध्ययन करें और इस बात को समझें कि कौन सा विद्यार्थी किस प्रकार की जीवन पद्धति अपनाता चला जा रहा है। अपना मनोविकास किस दिशा में कर रहा है? विद्यार्थियों की चित्तवृत्तियों का अध्ययन कर लेने के बाद अध्यापक को चाहिए कि वह अपने छात्रों का विचार संपादन करे। उनके मस्तिष्क से अवांछित विचारों अथवा वृत्तियों को निकाले और वांछित विचारों तथा वृत्तियों की स्थापना करे।

विचार संपादन का यह कार्य कठिन तथा समय साध्य प्रतीत हो सकता है और विचार आ सकता है कि कोई अध्यापक पाठशाला भर के सारे छात्रों पर कैसे तो दृष्टि रख सकता है? कैसे उनकी चित्तवृत्तियों तथा विचारधाराओं का अध्ययन कर सकता है और कैसे उनका संपादन कर अवांछनीयताओं को वांछनीयताओं से स्थानापन्न कर सकता है? यह काम तो बड़ा व्यापक और बड़ा कठिन विदित होता है, किंतु बात ऐसी नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसा तब लगता है, जब कोई एक अध्यापक ही यह सारा दायित्व केवल अपने पर समझे। यह कर्त्तव्य केवल किसी एक अध्यापक का नहीं है और न एक अध्यापक इस वृहत कार्य को कर सकता है। इस विचार अध्ययन तथा संपादन का कार्यक्रम स्कूल के प्रत्येक अध्यापक को अपना कर्त्तव्य समझना होगा और तत्परता से सावधानीपूर्वक उसमें लगना होगा। जब प्रत्येक अध्यापक समान रूप से स्थिति के अनुसार विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों पर दृष्टि रखेगा तो क्रम से सारे विद्यार्थी ही उनकी नजर के सामने आएँगे, जिससे प्रत्येक अध्यापक प्रत्येक विद्यार्थी के स्वभाव से परिचित हो जाएगा।

यहाँ पर यह बात भी हो सकती है कि किसी विद्यार्थी के विषय में अध्यापक के बीच विचार-वैचित्र्य हो। इस प्रकार वैचित्र्य को समता में लाने के लिए अध्यापकों को आपस में विचार विमर्श करते रहना चाहिए। केवल किसी विद्यार्थी के विषय में विचार समीकरण के लिए ही क्यों ? यों भी छात्रों के बीच कार्यक्रम के माध्यम से चरित्र निर्माण करने के लिए भी तो अध्यापकों की विचारगोष्ठी होते रहना आवश्यक है। अपनी सामाजिक विचार गोष्ठियों के अवसर पर अध्यापकों को छात्रों में संस्कार सृजन करने के लिए पहले से ही रूपरेखा तैयार करते रहना चाहिए और एक निर्धारित प्रकार से अपना कार्यक्रम चलाना चाहिए। इस प्रकार एक प्रकार तथा एक पद्धति से रचना क्रम को क्रियान्वित करने से विद्यार्थियों पर डाले जाने वाले संस्कार जल्दी जड़ पकड़ने लगेंगे और निर्माण-अभियान वेग से चल निकलेगा। अध्यापकों की विचार गोष्ठियाँ किस समय हों और विद्यार्थियों को किस समय, क्या शिक्षा दी जाए इसका निश्चय अध्यापकों को देशकाल के अनुसार अपनी तथा विद्यार्थियों की सुविधा के अनुसार स्वयं कर लेना चाहिए। सारांश यह है कि अध्यापक वर्ग को विद्यार्थियों की चरित्र रचना के काम में ठीक उसी भावना के साथ करने में लगना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए, जिस प्रकार कोई विशाल एवं महत्त्वपूर्ण निर्माण कार्य करने के लिए इंजीनियरों तथा शिल्पियों का मंडल विचार करने के उपरांत एक मन तथा एक मत से कार्य में लग जाता है। विद्यार्थियों के रूप में राष्ट्र रचना का कार्य किसी भी उपयोगी स्थापत्य रचना से हजारों-लाखों गुना आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण है।

बच्चों के जीवन निर्माण की सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न करने के लिए उन्हें उपयुक्त, अनुरूप साहित्य पढ़ाया जाना चाहिए। पाठ्य-पुस्तकों में भी इस प्रकार के उपयोगी पाठों की कमी नहीं रहती। इसके अतिरिक्त यदि अध्यापक चाहे और प्रयत्न करे तो न केवल साहित्य अथवा भाषा की पुस्तकों से ही बल्कि भूगोल, इतिहास, गणित आदि विषयों को पढ़ाते तथा समझाते समय भी ऐसे सूत्रों तथा पहेलियों का समावेश कर सकता है, जो संस्कार सृजन के उद्देश्य में सहायक हो सकते हैं। किसी भी विषय को किसी दिशा में मोड़कर समझाया जा सकता है और ऐसा कर सकना किसी भी विचारशील अध्यापक की क्षमता परिधि में हो सकता है। तात्पर्य यह है कि कोई अध्यापक कोई भी विषय क्यों न पढ़ा रहा हो, उसको समझाते समय शैली में किसी भी संस्कार के लिए विचारों का पुट दे सकता है। विद्यार्थियों में विषय के प्रति ऊँची भावना जगाते हुए उदात्त मनोवृत्ति का बीज बो सकता है, जो कि आगे चलकर किसी भी दिशा में वांछित फल ला सकता है। इस प्रकार यदि हमारा अध्यापक वर्ग चाहे और प्रयत्न करे तो गिनती गिनाने से लेकर कविता तक हर विषय के माध्यम से विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण का कार्य कर सकता है।

भावनात्मक नव निर्माण के विचार साहित्य की बालोपयोगी पुस्तकें हों, यह आवश्यक है, किंतु इतना अनिवार्य नहीं है कि यदि पुस्तकों का अभाव है तो यह कार्य हो ही नहीं सकता। इसका एक सरल सा मार्ग यह है कि अध्यापक स्वयं ही एक बोलती पुस्तक बन जाएँ। जिन पढ़े-लिखे बालकों में सत्साहित्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पढ़ने की रुचि पैदा हो गई, मानो उनके चरित्र निर्माण का आधा काम पूरा हो गया। अपनी रुचि के स्तर से ही मनुष्य अपना ऊँचा-नीचा जीवनक्रम चुन लिया करता है।

अध्यापक समुदाय अपनी गरिमा व दायित्व समझें

किसी भी समाज में अध्यापक का अपना विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। पुरानी और नई पीढ़ी के मध्य वह न केवल एक सेतु का कार्य करता है, वरन आने वाली पीढ़ी को कल के समाज का नेतृत्व सँभालने और उसके गंभीर उत्तरदायित्वों को वहन करने योग्य भी शिक्षक ही बनाता है। यह ठीक है कि किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके अपने पुरुषार्थ और अपनी साधना के बल पर ही निर्मित होता है, किंतु मार्गदर्शन, शिक्षण का भी अपना महत्त्व है। अध्यापक नई पीढ़ी के शिक्षण और मार्गदर्शन का कार्य करता है। इसलिए समाज में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीनकाल में इसीलिए बालक को शिक्षा दी जाती थी—"आचार्य देवो भव" अर्थात जो तुम्हारा शिक्षण करता है, उसे देवता मानकर सम्मान दो।

अध्यापक या शिक्षक को यह सम्मान देने की व्यवस्था अकारण ही नहीं की गई थी। वास्तव में समाज को ऊँचा उठाने और नई प्रतिभाओं को विकसित करने में उस समय के आचार्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता था। उनके महान दायित्वों को देखकर ही समाज में उन्हें यह प्रतिष्ठा दी जाती थी।

अध्यापकों का महत्त्व आज के युग में भी कम नहीं हुआ है। भले ही वे स्वयं को एक वेतनभोगी कर्मचारी और समाज का उपेक्षित अंग समझते हों, किंतु इससे इनका महत्त्व या दायित्व कम नहीं हो जाता। शिक्षा का अर्थ आजकल वह नहीं रहा, जो प्राचीनकाल में समझा जाता था अर्थात व्यक्ति के समग्र विकास की आवश्यकता। यह आजकल प्रचलित शिक्षा पद्धति से न तो पूरी होती है और न अध्यापक अपने इस महान दायित्व को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझते हैं। यदि समझते भी हैं तो उसे अनुभव नहीं करते। उनकी दृष्टि में अध्यापक का वैसा ही कार्य है, जैसा कि किसी क्लर्क या ऑफिस कर्मचारी का काम। स्कूल के घंटों में अपनी ड्यूटी पूरी कर देने, पुस्तक पढ़कर सुना देने अथवा उसकी व्याख्या कर देने भर को ही अध्यापक अपना काम समझते हैं। काम ही नहीं व्यवसाय, जिसके बदले उन्हें प्रतिमास एक निश्चित रकम वेतन के रूप में मिल जाती है। वे समझते हैं कि स्कूल में जाकर हम पढ़ा देते हैं। चार-पाँच घंटे पढ़ाने के बाद हमारा दायित्व पूरा हो जाता है। उसके बाद विद्यार्थी से हमारा कोई संबंध नहीं रहता और न ही हमारी कोई जिम्मेदारी।

कुछ घंटे केवल पढ़ा देने भर से कर्त्तव्य पूरा हो जाए तथा साल में बहुत सी छुट्टियाँ मिलने के कारण बहुत से व्यक्ति यह समझते हैं कि अध्यापन सबसे सरल व्यवसाय है और सबसे आराम की नौकरी है। जिसमें काम कम और आराम ज्यादा मिलता है। अध्यापन के प्रति इस उथले दृष्टिकोण के कारण शिक्षण जैसी महत्त्वपूर्ण सामाजिक-राष्ट्रीय आवश्यकता को जहाँ व्यवसाय का रूप मिला है, वहीं अध्यापक की गरिमा भी कम हुई है।

अध्यापन न तो कोई व्यवसाय है और न बच्चों को अक्षर-ज्ञान, विविध जानकारियाँ प्राप्त करा देने जैसा साधारण कार्य है। यदि अक्षर-ज्ञान को ही शिक्षण की संज्ञा दे दी जाए तो इस स्तर का शिक्षण दो-चार महीने में ही पूरा किया जा सकता है। यदि विविध जानकारियों को इकट्ठा कर विद्यार्थियों के सामने ही प्रस्तुत कर देना अध्यापक का कार्य हो तो वह कार्य पुस्तकों के द्वारा भी संभव हो सकता है। उसके लिए वर्षों तक स्कूल जाना और प्रतिदिन घंटों मगजपच्ची करना अनावश्यक है, लेकिन दुर्भाग्य से अध्यापन का यही अर्थ लगाया जाता है और शिक्षक का कार्य इतना भर समझा जाता है। शिक्षा और शिक्षक के महत्त्व तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दायित्व को इतने क्षुद्र दायरे में ही सीमित कर देना न केवल अनुचित है, वरन उससे कई हानियाँ भी हैं। विद्यार्थी और अध्यापक के औपचारिक संबंध, छात्रों द्वारा अध्यापकों की अवहेलना तथा शिक्षकों द्वारा अपने विद्यार्थियों के सामने अपनी गरिमा न रखना, छात्र अध्यापक के संबंधों में तनाव, तज्जनित आक्रोश, छात्रों की उद्दंडता और शिक्षकों की कुढ़न आदि कई दुःस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। इस कारण उनके आपसी संबंध घनिष्ठ और एकदूसरे के प्रति उत्तरदायित्व के नहीं बन पाते।

यद्यपि आजकल की समूची शिक्षा व्यवस्था ही दोषपूर्ण है। आवश्यकता उसमें आमूल-चूल परिवर्तन करने की है। सरकारी स्तर पर इसके प्रयास भी चल रहे हैं। परिवर्तन का प्रारंभ विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व अनुभव करने से होना चाहिए। प्राचीन काल में अध्यापकों या गुरुओं का स्वरूप एक तपस्वी, वत्सलतापूर्ण अभिभावक और व्यक्तित्व के माध्यम से शिक्षा देने वाले ऋषि का होता था, न कि कोई लौकिक आकर्षण। उस व्यवस्था को ज्यों का त्यों पुनः लौटाया नहीं जा सकता, परंतु जिन आदर्शों के आधार पर वह व्यवस्था संचालित होती थी, उन्हें तो स्थापित किया ही जा सकता है। आज के युग में आर्थिक आवश्यकताओं की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। पहले गुरुकुलों की व्यवस्था जन सहयोग से ही चलती थी। सहज श्रद्धा से प्रेरित होकर उदारतापूर्वक लोग जो कुछ देते थे, उसके अतिरिक्त अपने छात्रों को साथ लेकर श्रम द्वारा जीवनोपयोगी आवश्यकताओं का उत्पादन किया जाता था। अब छात्रों का शिक्षण वेतनभोगी अध्यापक करते हैं। ये भी वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल करते देखे जाते हैं। प्राचीनकाल में शिक्षकों, गुरुओं द्वारा इस संबंध में कोई बहुत बड़ी आर्थिक अपेक्षाएँ नहीं की जाती थीं। विलासिता के स्थान पर सादगी, सुविधाओं के स्थान पर तपस्वी जीवन ही उनका आदर्श होता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यापकों का आदर्श भी यही होना चाहिए। उन्हें साधन-सुविधाओं की माँग करने, वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करने के स्थान पर अपनी गरिमा को सार्थक करने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। संपन्न जीवन व्यतीत करने के लिए औरों की देखा-देखी प्रतिस्पर्द्धा और भाग-दौड़ में ही अपनी शक्तियाँ लगाई जाती रहें, तो फिर मूल उद्देश्य गौण हो जाता है। साधन-सुविधाएँ बढ़ा लेने पर दूसरों की दृष्टि में बड़ा आदमी भले ही बना जा सकता है, पर उससे अपने महान दायित्व को पूरा करने में कोई सहायता मिलने की अपेक्षा अवरोध ही ज्यादा खड़े होते हैं। वैसे भी अध्यापकों को कोई ज्यादा वेतन नहीं मिलता। यदि धन संबंधी आवश्यकताओं का विस्तार किया गया तो उसके लिए दूसरे उपाय काम में लेने पड़ेंगे। स्वाभाविक ही वैसी दशा में मुख्य कर्त्तव्य से ध्यान हटेगा और उसका परिणाम अच्छा होगा, वह आशा नहीं की जा सकती। अध्यापकों को यह मानकर चलना चाहिए कि उन्हें अपने छात्रों को लैक्चर द्वारा संबंधित विषयों की जानकारी भर नहीं देनी है, बल्कि अपने आचरण और रहन-सहन द्वारा उनके सामने एक आदर्श रखना है, जिससे वे प्रेरणा ले सकें। वस्तुतः कहने-सुनने का इतना प्रभाव नहीं होता, जितना कि अपने व्यक्तित्व के माध्यम से बताने का। अध्यापक यदि अपने चरित्र और व्यक्तित्व द्वारा भी छात्रों को शिक्षा दे सकें, तो सुयोग्य नागरिकों के निर्माण की आवश्यकता तो पूरी होगी ही, छात्रों की दृष्टि में भी अध्यापक का स्थान ऊँचा उठेगा और उन्हें श्रद्धा मिलेगी।

बहुत से शिक्षक अपने छात्रों के सामने ही ऐसी हीन हरकतें करते रहते हैं, जिससे उनके प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होती है। माता-पिता के बाद बच्चा बाहर के किसी बड़े व्यक्ति के संपर्क में आता है तो वह अध्यापक ही है। छोटे बच्चे अध्यापकों को उसी श्रद्धा और सम्मान से देखते हैं, परंतु बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता जाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है, वह बड़े लोगों के आचरण को अपने विवेक की कसौटी पर कसने लगता है तो प्राय: शिक्षक के प्रति श्रद्धा भावना पर ठेस ही पहुँचती है। इन दिनों छात्रों में अनुशासनहीनता और उद्दंडता की वृत्तियाँ भी अधिकांशत: ऐसे कारणों से ही उत्पन्न होती हैं कि उनके सामने ऐसा कोई व्यक्तित्व नहीं होता, जिसके प्रति वे श्रद्धा रख सकें।

शिक्षक स्वयं अपने प्रति छात्रों में श्रद्धा उत्पन्न करें, इसके साथ यह भी आवश्यक है कि अभिभावक भी उनके प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करें। देखा जाता है कि साधारण सी बातों पर छात्र को डाँटा-फटकारा भी है, तो किसी दुर्भावना से ऐसा नहीं किया होगा, यह विचार करना ही चाहिए। समझना चाहिए कि अध्यापक ने छात्र को किसी गलती पर उसके हित के लिए ही सख्ती की होगी, किंतु स्वयं अभिभावकों का दृष्टिकोण इस संबंध में साफ नहीं रहता। वे समझते हैं कि अध्यापक एक राजकीय कर्मचारी है, जिसे सरकार से वेतन मिलता है। हमारा बच्चा स्कूल में पढ़ने जाता है, हम उसकी पढ़ाई के लिए फीस देते हैं। इससे अधिक विद्यालय से और अध्यापक से हमारे बच्चे का कोई संबंध नहीं है।

अध्यापकों, छात्रों और अभिभावकों द्वारा अपनाए जाने वाली इन भ्रांत धारणाओं के कारण अध्यापक को समाज में समुचित स्थान नहीं मिल पाता। प्राचीनकाल में अध्यापक अथवा आचार्य आर्थिक दृष्टि से कोई बड़ा लाभ नहीं उठाते थे, परंतु उन्हें शिष्यों से तथा अन्य नागरिकों द्वारा भरपूर सम्मान मिलता था। छात्र तो उनके चरणों में सदा नत मस्तक रहते ही थे, माता-पिता भी उनका सम्मान करते थे। उस समय समाज में गुरु को, आश्रम के अधिष्ठाता को सर्वोपरि स्थान प्राप्त था। जबकि आज के युग में अध्यापक बहुत ही उपेक्षित व्यक्ति है। अध्यापकगण स्वयं अपना महत्त्व और दायित्व समझें, इसके साथ-साथ समाज का भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक कर्त्तव्य है कि वह शिक्षक को समुचित सम्मान और प्रतिष्ठा दें। उनकी दैनंदिन आवश्यकता की पूर्ति का दायित्व शासन पर न छोड़कर स्वयं अपने कंधे पर लें।

शिक्षकों का महान उत्तरदायित्व

हमारे धर्मशास्त्रों में माता, पिता, आचार्य तीनों को बालक के जीवन निर्माण में महत्त्वपूर्ण माना है। माता-पिता उसका पालन-पोषण, संवर्द्धन करते हैं तो आचार्य उसके बौद्धिक, आत्मिक, चारित्रिक गुणों का विकास करता है, उसे जीवन और संसार की शिक्षा देता है। उसकी चेतना को जागरूक बनाता है। इसीलिए हमारे यहाँ आचार्य, गुरु को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है, उसे पूजनीय माना गया है। आचार्य के शिक्षण, उसके जीवन व्यवहार, चरित्र से ही बालक जीवन जीने का ढंग सीखता है, आचार्य की महती प्रतिष्ठा हमारे यहाँ इसीलिए हुई है।

अध्यापक और विद्यार्थी के बीच जो स्नेह भाव, आत्मीयता, सौहार्द्र, समीपता की आवश्यकता है, वह आज नहीं है और यही कारण है कि आज का विद्यार्थी डिग्री, डिप्लोमा ले लेता है, लेकिन व्यावहारिक जीवन का शिक्षण, चरित्र, ज्ञान, उत्कृष्ट व्यक्तित्व का उसमें अभाव रहता है। इन सबके बिना विद्या अधूरी है। जो जीवन को प्रकाशित न करे, पुष्ट न बनाए, वह विद्या किस काम की? चरित्र निर्माण की, व्यावहारिकता की शिक्षा पुस्तकों से नहीं मिल सकती। वह तो व्यक्ति की समीपता से, उसके चरित्र, आचरण को देखने, समझने से प्राप्त होती है, जो आज की शिक्षा पद्धति में नहीं के बराबर है। निस्संदेह हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति में इसका बहुत ध्यान रखा गया था। आचार्य और विद्यार्थी का सहजीवन आश्रमों में बीतता था। उस समय विद्यार्थी पाठ ही नहीं सीखता था, अपितु आचार्य के जीवन से चरित्र, व्यवहार भी सीख लेता था। इसी सत्य पर प्रकाश डालते हुए एक बार कवींद्र-रवींद्र ने कहा था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"शिक्षा के संबंध में एक महान सत्य हमने सीखा था। हमने यह जाना था कि मनुष्य से ही मनुष्य सीख सकता है। जिस तरह जल से ही जलाशय भरता है, दीप से दीप जलता है, उसी प्रकार प्राण से प्राण सचेत होता है। चरित्र को देखकर ही चरित्र बनता है। गुरु से संपर्क-सान्निध्य प्राप्तकर उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ही मनुष्य, मनुष्य बनता है। आज का शिक्षक प्राण नहीं दे सकता, चरित्र नहीं देता, वह पाठ दे सकता है। इसीलिए आज का छात्र किसी दफ्तर, अदालत का एक बाबू बन सकता है, लेकिन मनुष्य नहीं बन पाता।"

आज शिक्षक और विद्यार्थी के बीच बहुत बड़ी खाई पैदा हो गई है—संबंधों की। यद्यपि इसका कारण आज की सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ भी हैं, लेकिन जो शिक्षक हैं, अध्यापक हैं, व्यक्तिगत तौर पर इस जिम्मेदारी से नहीं बच सकते। एक बार शिक्षक दिवस पर बोलते हुए एक केंद्रीय मंत्री महोदय ने कहा था—"आप तो विद्यार्थियों की परीक्षा साल में एक या दो बार लेते हैं, किंतु विद्यार्थी तो आपकी परीक्षा प्रतिदिन, प्रतिघंटे, प्रतिक्षण ही लेते रहते हैं। वे आपको कक्षा में आते ही देखते हैं और फिर कक्षा के बाहर दूसरों के साथ मिलते-जुलते भी देखते हैं। वे जैसा आपको देखते हैं, वैसा ही स्वयं भी सीखते हैं, करते हैं। इसलिए जैसे आप होंगे, वैसे ही आपके विद्यार्थी, भारत के ये नौनिहाल भी होंगे।"

मंत्री महोदय के उक्त सारगर्भित शब्दों से शिक्षकों की जिम्मेदारी जो व्यक्तिगत रूप से उनके ऊपर है, उससे इनकार करने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती और बच्चों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता, चारित्रिक त्रुटियों के लिए कुछ सीमा तक शिक्षकों को भी उत्तरदायी माना जाए तो ठीक ही होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ तक भी कोई बड़ी बात नहीं कि शिक्षक बच्चों को अच्छी बातें नहीं सिखाते, किंतु जब अपने गलत व्यवहार और चारित्रिक त्रुटियों से बच्चों के सामने गलत आचरण करते हैं तो यह एक अक्षम्य सामाजिक अपराध ही है। हम देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चों के समक्ष अध्यापक लोग बीड़ी पीते हैं। भद्दे हँसी-मजाक करते हैं। अपने दोस्तों के लिए बच्चों के द्वारा बीड़ी, पान, सिगरेट मँगाते हैं। बड़े स्कूल, कॉलेजों में विद्यार्थियों के साथ हँसी-मजाक पूर्ण बराबरी का व्यवहार, कई अनर्गल विषयों पर वार्तालाप करना, अपना चारित्रिक स्तर निम्न रखने, जैसी कई बातें हैं जो विद्यार्थियों के समक्ष गलत उदाहरण पेश करती हैं। यद्यपि आजकल के विद्यार्थी भी दूध के धुले नहीं हैं तथापि शिक्षकों का उत्तरदायित्व अधिक है। बच्चा यदि गलत आचरण करता है, तो वह अभिभावकों की त्रुटि का परिणाम है। इसी तरह विद्यार्थी यदि अनुशासनहीन और उद्दंड बनते हैं तो यह शिक्षकों की भूल का परिणाम ही माना जाएगा।

हमारे देश का शिक्षक बहुत ही सामान्य स्थिति में जीवन निर्वाह करता है। इसके अतिरिक्त जीवन की जटिलताएँ बढ़ जाने, छात्रों की बढ़ी हुई संख्या के कारण भी आज के शिक्षक के लिए छात्रों से व्यक्तिगत संपर्क रखना कठिन हो गया है, लेकिन एक स्वतंत्र राष्ट्र के नागरिक के नाते अपने समस्त अभाव, अभियोगों, व्यक्तिगत कठिनाइयों में हम अपने उत्तरदायित्वपूर्ण कर्त्तव्यों से विमुख नहीं हो सकते। परोपकार और लोक-कल्याण की भावना रखकर ही शिक्षकों को बच्चों के जीवन निर्माण की दिशा में अग्रसर होना पड़ेगा। यह सच है कि प्रारंभिक जीवन के लंबे शिक्षाकाल में विद्यार्थी और शिक्षक का संपर्क बड़े ही महत्त्व का है। यदि इस समय में बिना किसी लाभ की भावना से भी यदि बच्चों के जीवन निर्माण की दिशा में शिक्षक वर्ग ध्यान दें तो यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बहुत बड़ा पुण्य कार्य होगा। कोई संदेह नहीं कि इन्हीं बच्चों में से महापुरुष, विद्वान, तपस्वी, लोकसेवी, जननायक, कुशल नेता निकलकर न आएँ। जिस देश में सुयोग्य व्यक्तियों की बहुतायत होती है, वह देश गिर नहीं सकता, न उसे कोई हानि ही पहुँचा सकता है।

हमारे देश, समाज, सभ्यता, संस्कृति का भार बहुत कुछ शिक्षकों के कंधों पर ही रखा है। अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए बच्चों के उत्कृष्ट व्यक्तित्व का निर्माण करने में अधिकाधिक प्रयास आवश्यक है। आज के शिक्षकों की यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

अध्यापकों की योग्यता एवं जिम्मेदारी

अध्यापक की शिक्षा और परीक्षा में भविष्य में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है। जो विषय शिक्षार्थियों को पढ़ाए जाने हैं, उनके संबंध में अध्यापकों को न केवल ज्ञान, वरन अनुभव भी होना चाहिए।

अध्यापक की योग्यता इतनी ही पर्याप्त न समझी जाए कि वह निर्धारित पाठ्य पुस्तकों में से प्रायः पूछे जाने वाले विषयों को पढ़ाकर छात्रों को उत्तीर्ण करा दें और अपने दायित्व से छुटकारा पाएँ, वरन उसका मूल दायित्व यह होना चाहिए कि जो छात्र उनसे पढ़कर निकलें वे प्रतिभा एवं शालीनता की दृष्टि से ऊँचे स्तर के सिद्ध हों। इसके लिए पाठ पढ़ा देना पर्याप्त नहीं, वरन निज का जीवन भी इस स्तर का ढालना होगा कि वे अभिभावक स्तर की भूमिका निभा सकें और विद्यार्थियों को अपना निज का बालक समझकर उसका व्यक्तित्व विकसित करने एवं भविष्य उज्ज्वल बनाने में कुछ उठा न रखें। इसके लिए उन्हें छात्रों से निजी संपर्क बनाने होंगे और व्यक्तिगत रूप से यह तथ्य ध्यान में रखने होंगे कि उनमें किस स्तर की प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यापक अपने आदर्श से मार्गदर्शन दें

चिंतन की उत्कृष्टता, चरित्र की प्रामाणिकता और न्यायोचित परस्पर सहकार की प्रवृत्तियाँ ऐसी हैं, जिन्हें शिक्षण काल में ही छात्रों में अंकुरित और पल्लवित किया जाना चाहिए, क्योंकि गुण, कर्म, स्वभाव में सत्प्रवृत्तियों का समावेश हुए बिना व्यक्तित्व उस स्तर तक नहीं उभरता, जिससे आत्मसंतोष मिल सके, प्रतिभा उभर सके और प्रामाणिकता के आधार पर जनसाधारण का सम्मान एवं सहयोग अर्जित करना संभव हो सके।

इस आवश्यकता की पूर्ति शिक्षण के साथ-साथ ही होती चले, यह आशा की जानी उपयुक्त ही है, क्योंकि हरी लकड़ी मोड़ी जा सकती है, गीली मिट्टी से बरतन, खिलौने बन सकते हैं। धातु को नरम बनाकर ही उसे किसी साँचे में ढालकर उपयोगी उपकरण के स्तर तक पहुँचाया जा सकता है। संस्कार ग्रहण करने की सही आयु उठती उम्र ही है। उसमें प्रधान उपलब्धि शिक्षा के रूप में अर्जित की जाती है, किंतु साथ ही यह भी सही है कि इन्हीं दिनों वातावरण के अनुरूप नवोदित बालकों का व्यक्तित्व भी भले-बुरे स्तर का विनिर्मित होता है। कुसंग एवं सत्संग उन्हें अत्यधिक प्रभावित करते हैं। स्कूलों में प्रवेश पाने से लेकर उसे छोड़ने तक की यह संधि ऐसी होती है, जिसमें भावसंवेदनाओं का अत्यधिक उभार रहता है। वे वातावरण से, संबद्ध व्यक्तियों से प्रेरणाएँ ग्रहण करते और उन्हें जीवनक्रम में उतारकर परिपक्व करते जाते हैं। यही संचय विकसित स्थिति में पहुँचने पर व्यक्तित्व एवं चरित्र रूप में दृष्टिगोचर होता है।

इन तथ्यों को समझते हुए शिक्षण काल में लगने वाले बहुमूल्य समय में ही नीतिनिष्ठ और समाजनिष्ठ की मनोभूमि बनाई जानी चाहिए। उन्हें श्रेष्ठ नागरिक एवं प्रतिभावान पुरुषार्थी बनाए जाने के लिए समुचित प्रयत्न होना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदतों का परिमार्जन एवं परिष्कार इन्हीं दिनों संभव है। इस संभावना को सार्थक कर दिखाने पर ही यह आशा अपेक्षा की जा सकती है कि समय आने पर श्रेष्ठ नागरिक बन सकेंगे। समाज को समुन्नत बनाने में योगदान दे सकेंगे। अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व के द्वारा देश, धर्म, समाज और संस्कृति की मूल्यवान सेवा कर सकेंगे।

यह सब कैसे हो सकता है? इतने बड़े काम में हाथ कौन डाले? उसे पूरा कर दिखाने का व्रत कौन धारण करे? इसके उत्तर में एक ही केंद्र पर निगाह जा टिकती है, वह है—शिक्षातंत्र। इसमें सूत्र-संचालक, अधिकारी, नीति निर्माताओं का उच्च वर्ग तो प्रमुख है ही, क्योंकि उन्हीं के इशारे पर छात्रों को पढ़ाई की सारी सुविधाएँ, योजनाएँ मिलती हैं, परंतु इस प्रक्रिया का व्यावहारिक कार्यभार शिक्षक ही सँभालते हैं। आर्कीटैक्ट किसी इमारत का नक्शा भर बनाकर अपना काम पूरा करता है। उसकी नींव खोदने से लेकर, इमारत खड़ी करने और छत डालने तक की पूरी प्रक्रिया, सब मजदूर-लुहार, बढ़ई आदि शिल्पी श्रमजीवी ही मिलकर पूरी करते हैं। शिक्षातंत्र के विशाल क्षेत्र में, अग्रिम मोर्चे पर लड़ने वाले सैनिकों की तरह, शिक्षक समुदाय की ही प्रधान भूमिका रहती है। श्रेय का दावेदार कोई भी क्यों न बने, पर यदि नई पीढ़ी का स्तर वास्तव में ही ऊँचा उठाना है, तो उसमें पहली श्रेणी की भूमिका निभाने में अध्यापकों का श्रम और मनोयोग ही चमत्कारी सत्परिणाम प्रस्तुत करता दिखाई देगा। इस प्रकार उन्हें प्रकारांतर से नींव के पत्थर जैसी स्थिति में रहने वाले राष्ट्र निर्माता ही कहा जा सकता है। स्वतंत्रता के बाद जो राहत की साँस लेने का जनसाधारण को अवसर मिला है, उसे प्रगतिशीलता की दिशा देने का कार्य अध्यापक ही कर सकते हैं। अध्यापकों में भी वे वंदनीय, अभिनंदनीय हैं, जिन्हें उपाध्याय का, आचार्य का श्रेय तथा सम्मान मिल सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देश का चिंतन और चरित्र बदल सकने में समर्थ अध्यापक

देश की आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा की नई पद्धति का निर्माण करना होगा। विदेशों की नकल करने की मनोवृत्ति से वे तत्त्व भी भर गए हैं, जिनके कारण हमें योजनाओं की भी वैसी ही नकल करना अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न लगता है। आज जो भी स्थिति हो, जैसी भी पाठ्य पद्धति हो, हमारा पूरा-पूरा विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं, जब हमें अपने देश की स्थिति और आवश्यकता को ध्यान रखते हुए शिक्षण-पद्धति में क्रांतिकारी परिवर्तन करने पड़ेंगे। ऐसा परिवर्तन, जो समय की विकृतियों से जूझने और प्रगति का व्यावहारिक मार्ग अपनाने में समर्थ हो।

वह समय कब आएगा, कहा नहीं जा सकता। हो सकता है कि अपने मूर्द्धन्यों को व्यवहारवादी बनने में अभी देर लगे। ऐसी दशा में विचारणीय है कि क्या अध्यापक वर्ग अपने निज के बलबूते कुछ नहीं कर सकता?

यदि यह वर्ग अपनी गुरु गरिमा को ध्यान में रखते हुए, छात्रों का व्यक्तित्व विकसित करते हुए उनका भविष्य उज्ज्वल बनाने की बात सोचने लगे तो इतने भर से बहुत काम चल सकता है। जिस प्रकार अभिभावक बच्चों के लिए दिन भर सोलह घंटे खटते रहते हैं। उसी प्रकार अध्यापक निजी परिवार का निर्वाह करने के लिए सरकारी वेतन से संतुष्ट रहकर छात्रों के कल्याण की बात सोचें और उसके निमित्त जो बन पड़े, उसे करने के लिए यथासंभव प्रयत्न करें।

प्रशिक्षण के उपयुक्त सही वातावरण

राजा एक राज्य का शासन करता है। पुरोहित का एक गाँव यजमान होता है। एक गाँव का चिंतन, चरित्र और व्यवहार परिष्कृत करने में एक भावनाशील अध्यापक ऐसी शानदार भूमिका निभा सकता है, जिसे कायाकल्प के समतुल्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा जा सके। शर्त एक ही है कि उसे अपने पद के गौरव का भान हो और सच्चे मन से अपना सारा समय उसी कार्य को उच्चस्तरीय मनोविनोद मान कर लगाए रह सके। समय की कमी का प्रश्न नहीं है। प्रश्न भावना की उत्कृष्टता में कमी होने का है। यह कार्य वेतन के लिए काम करने वाले, ऊपरी आमदनी का अवसर तलाश करते रहने वाले श्रमिकों का नहीं है।

पिछले दिनों अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण होना ही छात्रों और अध्यापकों की प्रशंसा का केंद्र माना जाता था। अब नई समस्याएँ सामने आने से इस सफलता के संबंध में नए सिरे से सोचा जाने लगा है। शिक्षितों की बेरोजगारी से उत्पन्न हुआ असंतोष गुंडागीरी की ओर मुड़ता है। उत्तीर्ण होने से पूर्व ही वह भयानक आशंका उन्हें संत्रस्त करने लगती है और नशेबाजी से लेकर अपराध स्तर की गुंडागर्दी इस समुदाय में फैलने लगी है। नकल करके, डराकर, लोभ देकर पास होना तो आम बात हो गई है। ऐसी दशा में उत्तीर्ण हुए और काम पर चिपकाए हुए लोग भी अयोग्यता के कारण अपना काम सही तरीके से पूरा नहीं कर पाते और जिस भ्रष्टाचार के सहारे पास हुए थे, उसे पूरे समाज में फैला देने के अवसर तलाशते रहते हैं। ऐसी बहुसंख्यक घटनाओं ने मूर्द्धन्यों का ध्यान इस ओर खींचा है कि विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा भी दी जाए और इसके लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम बने। यह प्रसन्नता की बात है। यह पहले से ही समझा और किया गया होता तो और भी अच्छा होता। नैतिक शिक्षा की पाठ्य पुस्तकें बनें और उनकी कक्षाएँ चलें, यह हर दृष्टि से प्रशंसनीय है, पर यदि इसे वस्तुतः वैसा बनाना हो तो पुस्तकें छपने के साथ-साथ अध्यापकों को भी उसी साँचे में ढलना पड़ेगा। चरित्र का जहाँ तक संबंध है, वह चरित्रवानों से ही उपलब्ध हो सकता है। मिट्टी के खिलौना से लेकर पुरजे और आभूषण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक साँचे में ढाले जाते हैं। साँचे यदि सही हैं, तो उनमें ढली हुई वस्तु भी बढ़िया बनेगी।

अध्यापकों के शिक्षण में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि उन्हें सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माता बनाना है। बच्चों को पाठ पढ़ाकर उत्तीर्ण कर देना भर उनका काम नहीं है, वरन जिस क्षेत्र में उन्हें काम करना है, उस समस्त परिकर को नैतिक शिक्षा देनी है, अन्यथा अनैतिक वातावरण में समय गुजारने वाले बच्चे स्कूली नैतिक शिक्षा को एक औपचारिकता मात्र मानकर भुला देंगे और जैसे थे वैसे ही बने रहेंगे।

अध्यापकों की ट्रेनिंग इस स्तर की हो, जिसमें वे अपना चरित्र ऊँचा रखने का अभ्यास करें और इस स्तर तक पहुँचें कि उनके संपर्क में आने वाले छात्र भी उनका रहन-सहन, आचार-व्यवहार देखकर अनायास ही प्रभावित हों और पुस्तकों में पढ़ाई जाने वाली बातों को यथार्थ मान सकें। इसके लिए उन्हें उत्तीर्ण करने और काम सौंपने से पूर्व यह भलीभाँति जाँच लिया जाए कि उन्होंने अपना वास्तविक कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व समझा या नहीं, उसमें प्रवीण पारंगत हुए या नहीं।

दुर्गुणों से बचे रहने के अतिरिक्त सेवा-भावना और तत्परता अध्यापक के प्रधान गुण होने चाहिए और इसकी जाँच-पड़ताल गुप्तचर स्तर पर निरंतर निगाह रखते हुए की जानी चाहिए। जो इस आदर्शवादिता में अनुत्तीर्ण हों, उन्हें तो पूरी तरह अयोग्य ठहरा दिया जाए। अनुग्रह अंक भले ही किसी अन्य विषय में कितने ही दे दिए जाएँ। उनकी पूर्ति तो वे पीछे भी कर सकते हैं, पर आदतों का बदलना यदि इस कठिन परीक्षाकाल में न हो सके तो भविष्य के लिए उनसे क्या आशा की जा सकती है? ऊपर के पन्नों में अध्यापक वर्ग के लिए कितने ही काम सौंप दिए गए हैं। एक सद्गृहस्थ अनेक तरह की व्यवस्था करता है और उनका तालमेल अपनी व्यवस्था बुद्धि से मिला सकता है, पर यदि धीमे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम का प्रभाव उन पर भी आया हो तो हर स्कूल से जुड़ा एक जनसंपर्क अधिकारी अलग से नियुक्त किया जा सकता है। जो बच्चे के अभिभावकों से संपर्क रखे और यह सिखाए कि निजी जीवन को सफल तथा बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए किस प्रकार सोचना चाहिए और किस प्रकार क्या अस्वीकार और क्या अंगीकार कराना चाहिए? सरकार ने ग्रामसेवकों की नियुक्ति की है। उनके जिम्मे कृषि उद्योगों संबंधी आर्थिक बातें ही हैं। यहाँ उससे भिन्न प्रकार की नियुक्ति और जिम्मेदारी की चर्चा की गई है। वे प्रौढ़ पाठशाला, वृक्षारोपण, परिवार नियोजन, कुरीतियाँ उन्मूलन आदि के कार्यों को हाथ में लें तथा ऊँच-नीच, पर्दाप्रथा, अंधविश्वास एवं कुरीतियों से लोहा लें। यह भावना स्तर के ग्रामसेवक अध्यापक होंगे। इन्हें हर स्कूल के साथ पृथक से भी रखा जा सकता है, जो निरंतर इसी स्तर का ताना-बाना बुनते रहें और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन में अपना कौशल दिखाते रहें।

कितने ही घर-परिवारों की स्थिति अच्छी नहीं होती, उनमें सद्गुणों की दृष्टि से अनेकों कमियाँ पाई जाती हैं। ऐसी दशा में उसका प्रबंध ऐसे हाथों में हो जो अवकाश के समय भरपूर मनोरंजन कराते रहें, उसी के साथ सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण कराते रहें। छात्रावास संचालक को सच्चे अर्थों में सुयोग्य अभिभावक होना चाहिए, जो अपने छात्रों को हँसते-हँसाते व्यस्त भी रखें, उस व्यस्तता में वे विनोद अनुभव करें और सद्गुणों का अभ्यास करें।

आजकल छात्रावास बहुत मँहगे हो गए हैं। उनका लाभ संपन्न लोग तो उठा लेते हैं, पर गरीबों को किफायत का ध्यान रखते हुए निजी प्रबंध करना पड़ता है, उसमें उन्हें मनचाही छूट रहती है और कुमार्ग अपनाने का अधिक अवसर रहता है। अच्छा हो बोर्डिंग देहाती स्तर के अनुरूप हों और उनमें लागत कम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आए। बीच के ठेकेदारों को मुनाफा न कमाने दिया जाए, संभव हो तो सरकार उसमें कुछ छूट उसी प्रकार दे जैसे कि मिलिट्री के या दूसरे प्रकार के दफ्तरों में केंटीनों को दी जाती है। नैतिक शिक्षा का यह एक महत्त्वपूर्ण आधार है कि जो नैतिक शिक्षा के नाम पर पुस्तकों में पढ़ा हो, उसे व्यवहार में उतारने की प्रत्यक्ष शिक्षा छात्रावासों में मिले और जब वे लड़के छुट्टियों में घर जाएँ तो घर वालों के दुर्गुण न सीखें, वरन अपनी अच्छाइयों का प्रदर्शन करके अपना तथा अपने विद्यालय का गौरव बढ़ाएँ। समतामय जीवनयापन करने के लिए इन छात्रावासों में ढले हुए बालक कहीं अधिक उपयुक्त हो सकते हैं।

अपना काम अपने हाथ करने, नौकरों का सहारा न तकने की वृत्ति स्वावलंबन की दृष्टि से अति उपयोगी है। श्रमशीलता, मितव्ययता, शिष्टाचार, सुव्यवस्था, सहकारिता जैसे गुण ही किसी व्यक्ति के भावी जीवन को समुन्नत बनाने में काम आते हैं। छात्रावास में इन गुणों का बीजारोपण हो तो बड़े होने पर बड़े कामों में भी उनके उपयोग की आदत बनी रहती है और छोटी परिस्थितियाँ पैदा होने पर भी महान बनने का अवसर प्रदान करती हैं।

अनुशासन सबसे महत्त्वपूर्ण गुण है, वही आगे चलकर सुव्यवस्था के रूप में विकसित होता है, जो अपनी, अपने सामान की, कार्य की, साथियों की सुव्यवस्था बना सकता है, समझना चाहिए कि उसका भविष्य उज्ज्वल है। स्काउटिंग आंदोलन का आधार उसी स्तर की योग्यता बढ़ाने के लिए किया गया था। उन पुरानी बातों को हमें नवीन की तरह अपनाना चाहिए।

पंचतंत्र ग्रंथ के निर्माण की कथा प्रसिद्ध है। एक राजा के लड़के बड़े उजड्ड थे। पढ़ाने वाले किसी अध्यापक को टिकने न देते थे। पढ़ने-लिखने में तनिक भी रुचि नहीं लेते थे। राजा को चिंता हुई कि इनका भविष्य कैसे बनेगा? उसने घोषणा की कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो अध्यापक हमारे लड़कों को पढ़ाने और सुधारने में सफ़ल होगा, उसे मुँह-माँगा पुरस्कार दिया जाएगा। कई विद्वान आए और हार मानकर वापस लौट गए। अंत में एक विष्णु शर्मा नामक विद्वान आए। उन्होंने नया बीड़ा उठाया और नया तरीका अपनाया। वे मात्र कहानियाँ सुनाते थे। राजकुमारों की धीरे-धीरे इसमें दिलचस्पी बढ़ी और वे देर तक अध्यापक के पास बैठकर कहानियाँ सुनते रहते। वे कथाएँ बड़ी सारगर्भित होती थीं। उनमें जीवन विकास के तथ्यों का भरपूर समावेश रहता था। सुनने वाले लड़कों के मन में वे तथ्य भी उतरते गए। उन्हें अपने भविष्य और विकास के संबंध में सोचने का अवसर मिला। फलतः उनकी विचारधारा बदलती चली गई। वे सही मार्ग समझने के साथ-साथ उस पर चलने भी लग गए। इस प्रकार कुछ ही दिन में उनकी समस्त गतिविधियाँ संतोषजनक एवं उत्साहवर्द्धक बन गईं। पढ़ने-लिखने लगे। धीरे-धीरे ऐसे बन गए जैसा कि राजा चाहता था। पंडित को मुँह-माँगा पुरस्कार मिला और वह कथा ग्रंथ पंचतंत्र के नाम से लोकप्रिय हुआ।

छात्रों का भविष्य आज उन लोगों के हाथ है, जो आज शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भावी उत्तरदायित्वों को सँभालने वाले हैं। प्रगति और सुव्यवस्था के लिए आवश्यक है कि भावी जिम्मेदारियाँ सँभालने वालों को नैतिक दृष्टि से उत्कृष्ट बनाया जाए अन्यथा योजनाएँ कितनी ही उत्तम क्यों न हों, उन्हें चलाने वाले यदि उपयुक्त स्तर के न हुए तो सफलता संदिग्ध रहेगी।

छात्रों का निर्माण अध्यापक करें

समाज की नव रचना के उपाय सोचते-सोचते इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि यदि अध्यापक वर्ग इस शुभ अभियान में अपना थोड़ा सा समय देंगे तो शीघ्र ही आशाजनक फल सामने आते दिखाई देने लगेंगे।

सक्रिय विचारक्रांति की सफलता के लिए चुने जाने वाले वर्गों में से अध्यापकों से विश्वासपूर्ण अपेक्षा करने का विशेष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण यह है कि अध्यापक वर्ग अपेक्षाकृत अधिक जागरूक, चिंतक, स्रष्टा, संतोषी तथा उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। उसका ऐसा होना स्वभावत: देश के भावी नागरिकों का निर्माता होता है। वह अपने छात्रों को जिस प्रकार का बनाकर समाज को देगा, ठीक उसी प्रकार का प्रशासन तथा राष्ट्र बनेगा।

अध्यापक मात्र विद्या के शिक्षक ही नहीं, बल्कि परोक्ष रूप से संपूर्ण राष्ट्र के सर्वमान्य तथा मूल नेता भी हैं। नेता का एक प्रमुख कर्त्तव्य यही होता है कि वह जनता को समुचित जीवन मार्ग का ज्ञान कराए और ऐसे रास्तों पर चलाए, जिस पर चलकर समाज उन्नति तथा विकास की मंजिलें पार करता हुआ अधिक से अधिक सुख-शांति की दिशा में बढ़ सके। अध्यापक यह सब करते ही हैं। जहाँ वह अपने छात्रों को विषय ज्ञान कराता है, वहाँ उन्हें जीवन के लिए उपयोगी नैतिक शिक्षा देकर मानवोचित गुणों का विकास भी करने का प्रयत्न किया करता है। यह बात गलत नहीं कि आज शिक्षक अपने गुरुतर उत्तरदायित्व को वांछित सीमा तक नहीं निभा रहे हैं, जिससे समाज में वे सुखकर परिस्थितियाँ दिखाई नहीं दे रही हैं, जिनकी कोई राष्ट्र अथवा समाज स्वाभाविक अपेक्षा रखता है। छात्र वर्ग आज उद्दंड तथा अनुशासनहीन दिखाई दे रहा है, किंतु इसके अन्य अनेक भिन्न कारण हैं। इन कारणों में से एक कारण तो यह हो सकता है कि अध्यापक को वह वांछित वातावरण नहीं मिल पा रहा है, जो छात्र निर्माण के लिए आवश्यक होता है। दूसरा कारण यह भी माना जा सकता है कि अध्यापक आज अपनी सीमाओं में स्वतंत्र नहीं है। तीसरा कारण यह भी है कि आज राष्ट्र का पूरा ढाँचा ही बिगड़ गया है, जिससे बेचारे अध्यापक को भी प्रभावित होना पड़ रहा है। फिर भी इन प्रतिबंधों, परिस्थितियों तथा प्रभावों के होते हुए भी अध्यापक वर्ग आज भी काफी ईमानदार तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ राष्ट्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्माण की जिज्ञासा से काफी दूर तक ओतप्रोत है। इसलिए कोई भी राष्ट्र तथा समाज का हितचिंतक आशा भरी दृष्टि से अध्यापकों की ओर देख सकता है और अपेक्षा कर सकता है कि आज के अँधेरे में वह राष्ट्र की नव रचना में प्रकाश की किरण बनकर आगे बढ़ेंगे।

छात्रों का चरित्र निर्माण जितनी आसानी से अध्यापक कर सकते हैं, उतनी आसानी से न तो अभिभावक कर सकते हैं और न अन्य सामाजिक अथवा राष्ट्रीय नेतागण। अन्य नेताओं की तो बात ही क्या छात्रों पर जितना प्रभाव अध्यापक का होता है, उतना अभिभावकों का भी नहीं। एक बार कोई छात्र अपने अभिभावक की आज्ञा पालन अथवा उसके उपदेशों में विश्वास करने में मीन-मेख कर सकता है, किंतु अध्यापक के प्रति उसका विश्वास रहता ही है। अध्यापकों को अपने छात्रों पर फैले हुए इस अधिकारपूर्ण प्रभाव का व्यक्ति निर्माण के रूप में, राष्ट्र निर्माण की दिशा में अवश्य ही उपयोग करना चाहिए। आज तक की राष्ट्रीय आंदोलन तथा बलिदान परंपरा इस बात की साक्षी है कि देश धर्म के लिए उत्सर्ग करने वालों को प्रेरणा देने वाले अभिभावक नहीं अध्यापक ही रहे हैं। राष्ट्र के नेताओं एवं निर्माताओं के निर्माता मूल रूप से वे अध्यापक ही रहे हैं, जिन्होंने उन्हें अपनी छत्रछाया में पढ़ाया और शिक्षा दी। गुलामी के अंधकार युग में जिन अध्यापकों ने राष्ट्र के निर्माताओं को प्रकाश दे दिया वे आज स्वाधीनता के युग में राष्ट्र की गिरी दशा सुधारने में उदासीनता दिखलाएँगे, इसका न तो कोई कारण दीखता है और न ऐसा विश्वास ही किया जा सकता है।

आत्मीय अनुरोध

अध्यापक बंधुओं से निवेदन है कि वे अपनी गरिमा को समझें। यदि अध्यापक स्वयं को एक शिक्षा कर्मी के रूप में,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरकारी सेवारत कर्मचारी के रूप में देखता है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य इस देश का कोई हो नहीं सकता।

हमें अपने स्वाभिमान की रक्षा करनी है, आत्मसम्मान की रक्षा करनी है और यह तभी संभव है, जब हम अपने दायित्व को समझें और उसके निर्वाह में कोताही न बरतें। शिक्षकों का दायित्व महान है। वह ओछे चिंतन, ओछी भावनाओं के व्यक्तियों द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता। शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण का साँचा है। जैसा साँचा होता है, वैसे ही प्रतिरूप बनते हैं। शिक्षक छात्र के लिए आदर्श है, वह उसका अनुकरण करता है। श्रद्धा और सम्मान इसी शर्त पर प्राप्त होता चला जाता है। जहाँ कथनी और करनी भिन्न दिखाई देती है, वहीं श्रद्धा और सम्मान में कटौती होती चली जाती है और फिर शिक्षक एक अभिनेता से अधिक और कुछ नहीं रह जाता है।

बंधुओ! हमें अपने प्राचीन गौरव को समझना चाहिए और उसे खो देने के कारणों पर विचार कर अपने आप को बदलना चाहिए। एक शेर का बच्चा भूल से भेड़ियों के झुंड में चला गया। समयांतर में वह यह भूल ही गया कि वह शेर का बच्चा है। जब एक शेर ने उसे उसकी शक्ति का आभास कराया तो वह बहुत पछताया। आत्मविस्मृति में पड़े हनुमान को जामवंत ही आत्मज्ञान करा सके थे और फिर उन्होंने क्या-क्या नहीं कर दिखाया। इस युग का जामवंत महाकाल की दिव्य चेतना है जो आपके मानस को झकझोर रही है और अंत:करण में पीड़ित मानवता की पुकार सुनने को विवश कर रही है। इस पुस्तक को आप युग गीता ही समझें। जो स्वार्थ और अकर्मण्यता के मोह में फँसे हुए अर्जुनों को सुनाई जा रही है। निश्चित मानिए कि महाकाल की दिव्य चेतना "**करिष्ये वचनं तव**" का संकल्प कराकर ही रहेगी। आपके अंदर समाहित उस महान व्यक्तित्व को जाग्रत करना ही इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शासन और समाज शिक्षकों के लिए समुचित शिक्षण की व्यवस्था जुटाए यह आवश्यक है। शिक्षकों के लिए एक सामान्य राष्ट्रीय स्तर का जीवनयापन करने की सुविधा उपलब्ध कराना भी शासन और समाज का दायित्व है। समुचित व्यवस्था के अभाव में शिक्षण की प्रक्रिया प्रभावित होती है। इसे प्राप्त करने का प्रयास करना तो उचित है, लेकिन उसके अभाव में अपने कर्त्तव्य को पूरा न करना एक जघन्य अपराध है। शिक्षक महान है, उसे अधिकार से अधिक कर्त्तव्य का ध्यान रखना है। अधिकार और कर्त्तव्य में से एक चुनना हो, तो पहले कर्त्तव्य को चुनना है। परमात्मा ने जिस दायित्व को निभाने के लिए हमें चुना है उसे हम कितना पूरा कर रहे हैं, इसका आत्मावलोकन हमें निरंतर करते रहना चाहिए। दूसरों की ओर देखकर आत्मसंतोष करना उचित नहीं है। दूसरों ने भी दायित्व नहीं निभाया, यह दलील मान्य नहीं होती। आत्मचिंतन, आत्मपरिष्कार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास के चार चरणों को पूरा करते हुए एक ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करें जो भारत माता के चरणों में सुगंधित व्यक्तित्व समर्पित करने हेतु एक साँचे का कार्य कर सके। आप सरस्वती के साधक हैं, गणेश हैं, आपको निर्देश देना हमारी धृष्टता ही होगी। महाकाल की दिव्य चेतना आपसे निम्न अपेक्षाएँ रखती है। आशा है युग की पुकार अनसुनी न की जाएगी।

(१) भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति है। इस संस्कृति का पूरा दर्शन सूत्र रूप में गायत्री छंद में समाहित है। इसका दर्शन सभी छात्रों को समझाना चाहिए और उसका नित्य प्रति स्मरण करने हेतु प्रार्थना सभा में पाँच बार सस्वर उच्चारण कराया जाना चाहिए।

(२) प्रत्येक विषय के शिक्षण के साथ अध्यापक नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी दे सकते हैं। आत्म-परिष्कार की साधना के सूत्र, विषय शिक्षण के साथ जोड़े जा सकते हैं। छात्रों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ सघन आत्मीयता, उनकी समस्याओं को भलीभाँति समझकर उनका समाधान प्रस्तुत कर उन्हें संतुष्ट करना, अनुशासनहीनता रोकने का प्रभावी उपाय है। प्रताड़ना और दंड की व्यवस्था से मनोवांछित कार्य तो कराया जा सकता है, लेकिन किसी को बदला नहीं जा सकता। शिक्षक का उच्चस्तरीय चरित्र, व्यक्तित्व एवं शिक्षण में ईमानदारी ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनके द्वारा छात्रों को अपने अनुकूल ढालना आसान हो जाता है।

(३) ज्ञानदान महान दान है। शिक्षक केवल छात्रों को ही नहीं, उनके अभिभावकों को भी ज्ञान के आलोक से आलोकित कर सकता है। इस कार्य के लिए व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण की अनेकानेक समस्याओं पर लगभग २०० पॉकिट बुक्स तैयार की गई हैं। तीन रुपया मूल्य की ये पुस्तकें छात्रों अथवा अन्य सहयोगियों की सहायता से मँगाकर अपने पास रखनी चाहिए और उन्हें छात्रों को नियमित देकर व वापस लेकर स्वाध्याय परंपरा को जीवन का एक आवश्यक अंग बनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। छात्रों के माध्यम से पुस्तकें उनके अभिभावकों को पहुँचाकर उन्हें भी स्वाध्याय परंपरा से जोड़ना चाहिए। इस प्रकार ज्ञान का आलोक घर-घर पहुँचाकर राजकीय सेवा के साथ-साथ महान पुण्य के भागीदार बनने का सौभाग्य भी मिलता है।

(४) शिक्षक छात्रों को पारिवारिक दायित्व का बोध कराएँ, समाज निष्ठ बने रहने की प्रेरणा दें, पड़ोसियों के साथ मधुर संबंध रखने की प्रेरणा दें, स्वार्थपरता की हानियाँ एवं परमार्थ में ही स्वार्थ के सूत्रों को हृदयंगम कराएँ। स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का महत्त्व समझाएँ, जीवन जीने की कला के सूत्रों का ज्ञान विद्यार्थियों को कराएँ। शिक्षकों के पास एक बहुत बड़ी शक्ति है, उसे उन्हें समझना चाहिए। यदि प्यार और आत्मीयता के व्यवहार से उन्होंने छात्र वर्ग को अपनी बात मनवाने के लिए तैयार कर लिया तो समाज में कोई परिवर्तन कराना उनके लिए आसान होगा। जिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंधविश्वासों, कुरीतियों, दहेज, मृत्युभोज, विवाहों में फजूलखरची, पर्दाप्रथा, रूढ़िवादिता, व्यसन आदि दानवों पर विजय पाना शासन, धर्माचार्य, पुलिस, अदालत एवं सामाजिक संगठनों के लिए असंभव है, उसे संभव बनाना शिक्षकों के लिए बड़ा आसान है। यदि वे अपने विषय शिक्षण के साथ इन दानवों से परिचित कराकर भविष्य में इनसे बचने की प्रेरणा दें तो उनका प्रभाव छात्रों के जीवन पर पड़ेगा। महान कार्यों के प्रतिफल के रूप में समाज में सम्मान और आत्मसंतोष की उपलब्धियाँ अवश्य मिलती हैं।

(५) जिन छात्रों की सुलेख अच्छी है, उनको दीवार लेखन की प्रेरणा देकर दीवालों पर प्रेरणाप्रद वाक्य लिखवाने चाहिए। 'बोलती दीवारें' नामक पुस्तक यहाँ से मँगाकर उनके वाक्य छात्रों को समझा देने चाहिए। इस प्रकार रास्ता चलते व्यक्तियों को प्रेरणा देकर आप बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करा सकते हैं।

(६) विद्यालयों में समय-समय पर उत्सव, जयंतियाँ, राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं। इन अवसरों पर गाए जाने योग्य गीतों का संकलन यहाँ से कई पुस्तकों में प्रकाशित किया गया है। उन गीतों की ऑडियो कैसेट भी उपलब्ध हैं। विद्यालयों में कविता सम्मेलन कराए जा सकते हैं, जिसमें दस छात्रों को २-२ कविताएँ याद कराकर मंच से उनका गायन कराया जा सकता है। गीतों अथवा लेखों की प्रतियोगिताएँ भी कराई जा सकती हैं।

(७) एक अनुरोध सभी पाठक बंधुओं से यह भी है कि यह पुस्तक अधिक से अधिक शिक्षकों को पढ़ाए जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

अपने द्वारा किए जा रहे प्रयासों एवं उपलब्धियों से हमें अवगत कराते रहें, पत्र व्यवहार करते रहें। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ :

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा / 32

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org